शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0975-5255, (e): 2454-339X, Impact Factor 5.463 (SJIF)
UGC Approved Journal No. 40908

वाल्मीकि रामायण में धर्म एवं राजनीति

डॉ० (श्रीमती) कमलेश शर्मा
एसोसिऐट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद
ईमेलः kamleshsharma2306@gmail.com

सारांश

रामायण में धर्म की मान्यता को ही प्रधानता दी गई है और धर्म के अधीन ही राजधर्म को स्थान दिया गया है। धर्म व्यक्तियों को वांछित कार्य करने की प्रेरणा देता है तथा भौतिक और आध्यात्मिक जगत के बीच संतुलन स्थापित करता है। धर्म ही व्यक्ति तथा समाज के निर्माण का आधार तथा भारतीय संस्कृति की आत्मा है। रामायण में तीन शक्तियों – प्रभुता शक्ति, मंत्र शक्ति और उत्साह शक्ति का उल्लेख है एवं राजा के तीन कार्य बताये गये हैं – राष्ट्रीय शिक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्र की उन्नति। लेकिन प्रभुता की यह शक्ति धर्म के ऊपर आश्रित हो और उसकी पूर्णता चिन्तन, ध्यान तथा योग में है। राजनीति स्वतः कोई साध्य नहीं है, अपितु साधन है। वर्तमान समय की राजनीति में इन सबकी महती आवश्यकता है, ताकि अपने देश की सभी प्रकार से उन्नति हो तथा देश सम्पूर्ण विश्व में गौरवपूर्ण स्थान हासिल कर सके।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ० (श्रीमती) कमलेश शर्मा

वाल्मीकि रामायण में धर्म एवं राजनीति

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 169–171

Article No. 26
http://
anubooks.com?page_id=581

वर्तमान में देश की अवनति एवं पतन का प्रमुख कारण है, राजनीति का अनुचित प्रयोग। कुछ लोगों ने अपने हित के लिये उस पर स्वार्थ का आवरण चढ़ा कर उसके स्वरूप को विकृत कर दिया है। राजनीति में केवल दो शक्तियाँ कार्य करती हैं – चरित्र और दण्ड। ये दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं। चरित्र की रक्षा दण्ड से होती है और दण्ड के समुचित प्रयोग का आधार चरित्र है। इतिहास गवाह है कि जिस राज्य में चरित्र बल रहा है और दण्ड का उचित प्रयोग किया गया, उसका स्थायित्व दीर्घकाल तक रहा है और जब भी चरित्र या दण्ड सम्बन्धी असावधानी हुई, राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया।

विवेकशील, निःस्वार्थ एवं देशभक्त लोगों के लिये राजनीति लोक–कल्याणकारी अमोघ शस्त्र है। वही राजनीति जब अविवेकी, स्वार्थी एवं बेईमान लोगों के हाथ में आ जाती है; तो उसका दुरूपयोग करके लोग (रावण तथा कंस जैसे) दुराचारी, व्यभिचारी, कदाचारी एवं भ्रष्टाचारी बनकर समाज व देश का अनर्थ एवं विध्वंश करते हैं एवं लज्जाविहीन व्यवहार करते हुये राजनीति को वारांगना से भी बदतर रूप प्रदान कर रहे हैं। वास्वत में अच्छा राजनीतिज्ञ कभी भी अपने हित में संलग्न नहीं होता। प्रज्ञा का सुख ही उसका अपना सुख होता है एवं प्रजा का हित ही उसका अपना हित होता है। महात्मा गाँधी के अनुसार – ''जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं, वे नहीं जानते कि धर्म का अर्थ क्या है..... मेरे लिये धर्म से रहित राजनीति की कोई सत्ता नहीं। राजनीति धर्म का साधन मात्र है, धर्म रहित राजनीति मृत्यु का जाल है, क्योंकि उसमें आत्मा का हनन होता है।''[1] स्पष्ट है कि धर्म से रहित राजनीति अस्तित्वहीन होती है। नैतिक गुणों का समुच्चय ही धर्म है और यही धर्म राजनीति एवं शासन के लिये अपरिहार्य है। धर्म से सन्निहित नैतिक नियम ही राजनीति का आधार होते हैं। अतः धर्म ही राजनीति का मूल आधार है।

रामायण के अनुसार तत्कालीन समाज में धर्म का उच्च स्थान था। राजनीति का मूलाधार धर्म था। धर्म की प्रधानता एवं महत्व के कारण ही रामायण में राजनीति के लिये राजधर्म का प्रयोग हुआ है।[2] इस काल में राजा की सफलता धर्मपूर्वक शासन करने में थी।[3] शासन की सफलता के लिये राजा को राजधर्म विशारद होना आवश्यक था।[4] रामायण में राजागण धर्मज्ञ, सत्यसन्ध, धर्म की रक्षा करने वाले एवं धर्माचरण करने वाले कहे गये हैं।[5] तत्कालीन राजागण धर्मानुसार ही प्रजा की रक्षा करने के लिये बाध्य भी थे।[6] शासन के संचालन के कार्यों में प्रमाद से बचाने के लिये राजा पर धर्म का अंकुश रहता था।[7] इस प्रकार शासक वर्ग अधर्म का त्याग करके ही प्रजा का पालन करता था।[8] तत्कालीन शासन व्यवस्था में धर्म के विरूद्ध किसी व्यक्ति को दण्ड देने का भी विधान नहीं था। धर्मानुसार ही तद्विषयक व्यवस्था थी।[9] राज्य के कार्यों के सम्पादन के लिये धर्मानुसार ही आदेश दिये जाते थे।[10] इस प्रकार शासक वर्ग के लिये प्रयुक्त षट्गुण (नीति, विनय, अनुग्रह, विग्रह आदि) अनुष्ठेय होने पर भी वह उनके अनुपालन में स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता था।[11] राजा इन कार्यों को करने के लिये धर्मनुसार ही बाध्य थे। इस प्रकार रामायण कालीन राजनीति में धर्म अर्थात् नैतिक गुणों का महत्वपूर्ण स्थान था।

वस्तुतः नैतिक गुणों से रहित राजनीति जीवनरहित हो जाती है। राजनीति के जीवनरहित हो जाने से धर्म, सभ्यता तथा संस्कृति नष्ट हो जाती है। इससे राज्य में अराजकता उत्पन्न होती है और राज्य का पतन होने लगता है। वर्तमान में देश में सुव्यवस्था समृद्धि एवं शान्ति की स्थापना के लिये, लोगों के भौतिक, नैतिक एवं सर्वांगीण विकास के लिये सत्य, सदाचरण, निःस्वार्थ, कर्त्तव्य–निष्ठा, अनुशासन, संयम, समता, सौहार्द आदि नैतिक धर्मों से युक्त रामायण कालीन राजनीति का आश्रय लेना तथा उसकी नीतियों के अनुसार ही शासक एवं प्रजावर्ग द्वारा आचरण किया जाना ही श्रेयस्कर है।

निष्कर्षतः रामायण कालीन राजनीति धर्म से पूर्णतः सम्बन्धित एवं धर्म पर ही आधारित थी। राजनीति को सजीव बनाने के लिये धर्म (नैतिक गुणों) को राजनीति का आधार बनाना आवश्यक है। वर्तमान आधुनिक रामराज्य अर्थात् लोक–कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिये रामायण कालीन राजनीति के स्वरूप का आश्रय लेना अनिवार्य है।

सन्दर्भ

1. भारतीय राजनीति और शासन : कृपाराम बम्बाल, पृष्ठ – 419
2. राजन् धर्मविरूद्धं च लोकवृत्तेश्च गर्हितम्। तव चासदृशं वीर कपेरस्य प्रमापणम्।। वा0रा0 5/52/6
3. कथं नु मयि धर्मेण पृथिवीमनुशासति। भवन्तो द्रष्टुमिच्छन्ति युवराजं महाबलम्।। वा0रा0 2/2/25
4. धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च राजधर्म विशारदः। परावरज्ञो भूतानां त्वमेव परामर्थवित्।। वा0रा0 5/52/7
5. धर्मज्ञः सत्यसंधश्च शीलवाननसूयकः। क्षान्तः सान्त्वयिता श्लक्ष्णः कृतज्ञो विजितेन्द्रियः।। वा0रा0 2/2/31
6. तेषां गुप्तिपरीहारैः कच्चित ते भरणं कष्तम्। रक्ष्या हि राज्ञा धर्मेण सर्वे विषयवासिनः।। वा0रा0 2/100/48
7. नयश्च विनयश्चोभौ निग्रहानुग्रहावपि। राजावृत्तिरसंकीर्णा न नृपाः कामवृत्तयः।। वा0रा0 4/17/32
8. अवेक्ष्यमाणश्चारेण प्रजा धर्मेण रक्षयन्। प्रजानां पालनं कुर्वन्नधर्मं परिवर्जयन्।। वा0रा0 1/7/21
9. अन्यैरपि कृतं पापं प्रमत्तैर्वसुधाधिपैः। प्रायश्चितं च कुर्वन्ति तेन तच्छाम्यतेरजः।। वा0रा0 4/18/34
10. तस्य धर्मकृतादेशो वयमन्ये च पार्थिवाः। चरामो वसुधां कृत्स्नां धर्मसन्तानमिच्छवः।। वा0रा0 4/18/9
11. वाल्मीकि रामायण 4/17/32